
मेरे कुछ पल

कुछ सोच, कवितायें, और पल

प्रवीण कुमार राणा

मेरे कुछ पल

कुछ सोच, कवितायें, और पल

लोकपाल

अन्नागिरी, जनता जगी,
सरकार हिली, सहमति मिली!

नेतागिरी, राजनीति जगी,
संसद हिली, असहमति मिली!

सालों बाद, लोकपाल?

दीदार

काश खुदा एक पल के लिए,
उनको भी द्रिष्टि बक्श दे,
जो इस हुस्न के दीदार से महरूम है!

पता तू चले,
खुदा को भी कभी फुर्सत मिलती है
तब ही तू उसने आपको बनाया है!
ओ मेरे महबूब!

तू क्यूँ नहीं ?

तू इतनी दूर क्यूँ?
रात को हर राज बताता रहा मैं,
तुमसे आपने आप को छुपाता रहा मैं!

तू इतनी दूर क्यूँ ?
तेरे इंतज़ार को जिंदगी मानता रहा मैं,
तुमसे आपनी तन्हाई छुपाता रहा मैं!

तू इतनी दूर क्यूँ ?
ख्यालों को सच मान जीता रहा मैं,
तुमसे अपना प्यार छुपाता रहा मैं!

तू इतनी दूर क्यूँ?
दुनिया को तेरा नाम बताता रहा मैं,
आपना इकरार पर तेरे से छुपाता रहा मैं!
मैं तेरे इतना करीब क्यूँ , तू क्यूँ नहीं ?

तुम याद आई

जिंदगी का हर पल,
सदियों में बदल गया,
तुम याद आई इतना!

एक बूंद की प्यास में,
मैं सागर पी गया,
तुम याद आई इतना!

जिंदगी गुलिस्ताँ भी है

जिंदगी सुर्ख रेत की तरह थी!
आपके स्पर्श से जाना,
जिंदगी गुलिस्ताँ भी है!

जब हम आपनी ही यादों में तनहां थे!
पल पल जिन्दगी सवाली थी!
आपके प्यार से जाना,
जिंदगी गुलिस्ताँ भी है!

फरमाईश थी!

सुबह रंगीन थी, आपके जुल्फ की इनयात थी!
शाम मदहोस थी, आपके लब की गुस्ताखी थी!
रात हसीन थी, आपके जिस्म की नजाकत थी!
दोपहर व्यसता थी, आपके गहनों की जो फरमाईश थी!

इस रात का क्या करे!

आपकी यादों में दिन तू गुजर जाता है!
पर इस रात का क्या करे?
जो आकर रुक सी जाती है!

आपका ये चाँद,
अनगिनत तारों भरी रात में भी,
कभी कभी,
आपनी तन्हाई बादलों के चिल्मन में छुपा कर,
मुस्कुराता है!

हम नहीं जानते

प्यार क्या है!
वो नहीं जानते,
हर मुस्कराहट को खुशी समझो लेते हैं!

प्यार क्या है!
हम नहीं जानते,
उनकी हर अदा को पैगाम समझो लेते हैं!

बापू ने दिया है

आज की मायावादी दुनिया में,
कुछ मायावादी है!
आसमान पर थूकते,
और भूल जाते है!
यह स्वतंत्र आसमान,
बापू ने दिया है!